कौन बनेगा करोड़पति के बहाने

डॉ. सुशील जोशी

अब तो देखते-देखते थक व ऊब चुके हैं कि कौन बनेगा करोड़पति। और एक करोड़पति तो बन भी चुका है। लेकिन शायद अधिकांश लोग मेरे इस आकलन से असहमत होंगे कि केबीसी उबाऊ हो चला है। तो सवाल यह है कि क्यों?

मैं उन सवालों में नहीं जा रहा हूं कि ऐसे 'शो' में वाकई कौन कमाता है, कहां से इतना पैसा बंटता है वगैरह। मेरा सवाल थोड़ा अलग है। आखिर इस 'शो' में धरा क्या है? यह तो कहना होगा कि अमिताभ बच्चन बहुत अच्छे अभिनेता हैं और वे शो को एक गरिमा प्रदान करते हैं। उनके चेहरे पर बोरियत का भाव, कौन बनेगा करोड़पति खेलने की उत्सुकता में मलते हाथ, और ज़्यादा व आसानी से पैसा न बांट पाने की उनकी लाचारी सब कुछ बहुत बढ़िया ढंग से प्रस्तुत होता है।

लेकिन बार-बार के वही डायलॉग, वही स्थिर-सा सीन आखिर कब तक देखा जा सकता है। यह भी सही है कि पूरे 'शो' की सेटिंग बहुत लाजवाब है। आपको कभी पता नहीं चलता कि यह खेल चल कहां रहा है। कोई स्टेडियम है, हॉल है, धरती पर है, आसमान में है कहां है? ऑडिएन्स की बात बार-बार होती है मगर वे नज़र नहीं आते। धुंधलके में एहसास होता है कि शायद कोई है। यानी कुल मिलाकर एक काल्पनिक-सी दुनिया का एहसास मिलता है। लेकिन इस दुनिया में भी कब तक दिल लगाएं?

पता नहीं रेटिंग्स क्या हैं, कितने प्रतिशत लोग रात 9 से 10 बजे के बीच क्या करते हैं मगर इतना तो कहा ही जा सकता है कि काफी लोग केबीसी को देख रहे होते हैं। क्यों?

लोगों की रुचि के कई कारण हो सकते हैं। अमिताभ बच्चन, 'शो' की उत्तेजना, किसे कितना पैसा मिला वगैरह। आइए कुछ कारणों पर विचार करें।

मेरे विचार से सबसे पहला और महत्वपूर्ण कारण है पैसा। सवाल इतने आसान कि मुझे लगे, 'काश मैं वहां होता।' वाकई कई बार तो सवाल इतने आसान होते हैं कि लगता है पैसा बांटने का यह उतावलापन क्यों है? और फिर उन आसान सवालों में भी तीन 'लाइफ लाइन' और उन सबसे बढ़कर 'हिन्ट्स' देते खुद अमिताभ बच्चन। कुल मिलाकर लगता है कि पैसा संभाले न संभल रहा है। यह चीज़ हर व्यक्ति को सपने में करोड़पति बना देती है। कई लोग बताते हैं कि वे कई दिनों से फोन लगाने की कोशिश कर रहे हैं मगर कमबख्त लगता नहीं। बस एक बार फोन लग जाए...।

इस 'शो' को देखने का एक बड़ा कारण (कम से कम लोग ऐसा कहते तो हैं) 'जनरल नॉलेज' भी है। लोगों को लग रहा है कि केबीसी देखकर उनके बच्चों का (और शायद खुद का) ज्ञानवर्धन होगा। देखिए ना सोमवार से गुरुवार सिर्फ स्टार टीवी पर रात 9 से 10 बजे के बीच कोई 25-30 सवाल पूछे जाते हैं। यानी प्रति सप्ताह सौ-सवा सौ सवाल होंगे। उनके जवाब भी बताए जाते हैं। और ये सारे सवाल तथाकथित जनरल नॉलेज के होते हैं। लिहाज़ा यह 'शो' देखने-दिखाने से जनरल नॉलेज सीखने में मदद मिलेगी।

जल्दी ही केबीसी की किताबें बाज़ार में बिकने लगें, तो किसी को आश्चर्य नहीं होना चाहिए। उनमें वे सारे प्रश्न और उत्तर होंगे जो हफ्तेवार केबीसी में पूछे गए थे और साथ में अमिताभ बच्चन का पोस्टर मुफ्त मिल सकता है।

हमारे यहां जनरल नॉलेज की स्थिति ऐसी ही है। बच्चे अन्य विषयों की तरह जनरल नॉलेज भी रटते हैं। इसे भी एक विषय माना जाता है। इसे किसी व्यक्ति की आम जागरूकता या देश-समाज में रुचि का परिचायक कदापि नहीं माना जाता। शायद प्रतियोगी परीक्षाओं में या नौकरी के लिए साक्षात्कारों में व्यक्ति की विषय में निपुणता जांचने के अलावा यह जांच करना भी ज़रूरी समझा जाता है कि कहीं वह व्यक्ति किताबी कीड़ा तो नहीं है। इसलिए उसके जनरल नॉलेज अर्थात सामान्य ज्ञान की भी जांच की जाती है। शायद एक समय पर सामान्य ज्ञान के बारे में यह सोचा जाता था कि यदि कोई व्यक्ति रोज़ाना अखबार पढ़े, रेडियो सुने